परम कल्याण मंत्र



ॐकारबिन्दुसयुक्त नित्य ध्यायन्ति योगिन ।

कामद मोक्षद चैव ॐकाराय नमो नमः ॥

प्रकाशक
जीवणचंद धरमचंद झवेरी
झवेरी बजार,
मुंबई



Printed at
DHARMA VIJAYA PRINTING PRESS
14 Pritto[illegible] BOMBAY 3
Printer B M Patel
Proprietor Amritlal Harjivandas Patel



परमयोगी श्री शान्तिविजयजी महाराज

सवत् १९४ सम गु   दीक्षा सवत् १९६१ महा सुद ७

अर्पण !

शातिना सागरसमा

परमयोगी मुनिराजश्री शातिविजयजी महाराज,

आबु.

छेल्ला सात वर्षोमा आपश्रीनी पासेथी

मने जे आध्यात्मिक मीठी प्रसादी

मळी छे,

अने आपना सात्विक आत्माओ मारा अंतरमा

जे आल्हाद पूर्यो छे

तेनु

रण माराथी कई रीते आपी शकाशे ?

*   *   *

जींदगी टुकी छे ने सिद्धिओ महान् साधनानी छे

तेवा समयमा

एक क्षण मात्रनो पण प्रमाद नहिं सेवता,

*   *   *

' ॐ अर्हम्

नो सव सिद्धिमन्त्र

सदाय हृदयमा गुजतो राखो ! '

*　　　*　　　*

आ आपनी एक उपदेश प्रसादीना स्मरणाचन्ह रुपे

आपनाज ए प्रिय मन्त्र

ॐकार सबधी लखायलु आ नानु पुस्तक आपश्रीना हस्तकमलमा

धरी कृतार्थ थाउ छु जे स्वीकारशोजी !

ली सेवक

जीवणचद धरमचद

नी वदना

भूमिका

महासागरमा हीलोळे चडेला नावडा जेवु आ जीवन छे आयुष्यमर नानी मोटी स्टरिओ, उचा नीचा मोजाओ, अने भयकर पहाडोनी भेखटो वच्चेथी पसार थवु पडे छे ए प्रवासमा दरीयाना खराबाओ तरफ आगली चींधीने बची-जवानो मार्ग सूचवती दीवादाडीओ केटली उपकारक नीवडे छे ?

आ विजलीनी दीवादाडीओ बिचारी जड छे छताय केटली उपकारक छे ? तो पछी चेतन-दीवादाडीओनी वातज शी ? आ चेतनभरी दीवादाडीओ ससारमा जे तेने शोधे छे तेने तुरत सापडे छे आखो खूझी राखी सत्पुरुषोनो समागम करवो, तेमनु निर्मळ जीवन अने तेमनी ज्ञानधारा आपणा जीवनमा रस पूरे, तेज आपे, अने चकावे चडेला जीवन-नावने चोक्खी दिशा बतावे ! सत्पुरुषोनो समागम ए खरेखरज जीवनसागरनी दीवादाडी छे

आवा सतसमागमनी शोधमा आजसुधी जींदगीमा त्रण साधु मुनिराजोनो मने विशेष परिचय थयो प्रथम मुनि महाराजश्री मोहनलालजी महाराज, स १९६० थी योगनिष्ट आचार्य श्री बुद्धिसागर सूरिजी महाराज अने

' ॐ अर्हम्

नो सव सिद्धिमत्र

सदाय हृदयमा गुजतो रारुजे ! '

*   *   *

आ आपनी एक उपदेश प्रमादीना स्मरणाचन्ह रूप

आपनाज ए प्रिय मत्र

ॐकार सबधी ररायलु आ नानु पुस्तक आपथीना हस्तकमळमा

धरी कृतार्थ थाउ छु जे स्वीकारशोजी !

ली सेवक

जीवणचद धरमचंद

नी वदना

ससारना वधा प्रपचोथी दूर रही पवित्रतानी साक्षात् मूर्ति समा ए शातिविजयजीनु निस्पृही, सरळ, ने निराडवरी जीवन, निरागी ने सात्विक आत्मानी सुवास, अडोल शाति अने निर्दोष आनदपर जमावेली सत्ता, समागममा आवनारना सूतेला आत्माने मौन भाषामा-मधुर कठथी जागृत करवानी कळा, आखना इसारे सामाना हृदयमा शातिनु सिंचन करवानी मळेली सिद्धि, अने एक चतुर कीमियागरनी माफक चहेराना, सुदर ने सौम्य कोमळ भावथी, आपणा जीवनने अने जीवनना प्रत्येक श्वासने,–पोतानी अद्‌भूत जीवनकलाथी सौरभमर्यु बनाववानु तेजस्वी ज्ञान खरेखरज आपणने तेमना चरणे मस्तक नमावी रहेवाने फरज पाडे छे

बाळकना जेवु निर्दोष जीवनज दरेक साधुनु होवु घटे श्री शातिविजय महाराज ए दृष्टिए महान् साधु छे एकातना आवासमा, पहाडोना प्रभुत्वभर्या वायरानी मिठाश, अने भरचक ताजगी वच्चे समता ने समानत्व भावथी दुनीयानी दरेक उपाधिथी निवृत्त थई-खरेखरज भावथी निवृत्त थई चोवीसे कलाक आत्मा अने परमात्मानो योग साधवा मथी रहे छे तेज साधु-योगी श्री शातिविजयजीनु स्थान योगीनी दृष्टिए उचु छे

विश्वना दरेक रजकणमा सतायली दिव्यताने अने मनुष्यत्वने पूजी जाणवानु तेमनु आत्मिक तेज बहु ओछामा

१९७० मा परमयोगी श्री शांतिविजयजी महाराजनो उत्तरोत्तर लाभ मळ्यो श्री मोहनलालजी महाराजे श्री बुद्धिसागरनी महाराज माटे, अने श्री बुद्धिसागरजी महाराजे मुनिराजश्री शांतिविजयजी महाराज माटे सुंदर अभिप्राय आप्या आजे संसारमा पहेली बन्ने व्यक्ति नथी, तेओ काळधर्म पाम्या छे अने जींन्गानी एक झगमगती दीवादांडी जेवा ए आजुना एकांतमा सतत् आत्मचिंतन करनार मुनिराजश्री शांतिविजयजी मारे मन आजे एक पूजनीय व्यक्ति तरीके मारा हृदयमा स्थान लई बेठा छे

आ एकांतमा सताता महापुरुष श्री शांतिविजयजी महाराजना जीवनथी घणाय अजाण हशे, तेथी तेमनु टुंक जीवनचरित्र अत्रे आपी देवु इष्ट छे

तेओ एक रबारी कुलमा जन्मेला पुरुष जन्मस्थान मारवाड गाम मणोदर पिता भीम तोलाजी जन्म संवत् १९४६ ना महा सुद ५ जन दीक्षा संवत् १९६१ ना महा सुद ५ तेमना गुरु श्री तीर्थविजयजी महाराज अने गुरुना गुरु श्री धर्मविजयजी महाराज (त्रणे महात्मानो जन्म रबारी कुलमा तेमज ते बेउ महात्मा महान योगना अभ्यासी हता अे रीते आ त्रणे पेढी चालु योगना अभ्यासमाज प्रयास कर्या जाय छे) गुरु अने गुरुना गुरुश्री बन्ने काळधर्म पाम्या छे आजे मात्र तेओ एकलाज आजुना एकांत प्रदेशमा विचरे छे आ तेमनो बाह्य इतिहास आत्मिक इतिहास तो खूबज आनंददायक छे

आने देखाय छे प्रेम अने मात्र प्रेमनान-दैवी
संदेश आपतु तेमनु भाव भर्युं हास्य, अतिशय भो
सादाइ, आत्मनी नमणाई, अने तेना खूणामा बेठेलु
वात्सल्य जोइने रुनीनी आंखमा पण प्रेमना अश्रु
अेवु जादु तेमनामा जोवाय छे अेकांतमा बेसी आजे
साचा तत्वनु चिंतन करे छे जगत्कल्याणनी भावना
पोथाओ वांची पोथाओमाज राखवा जेवु ज्ञान तजीने
भर्युं जीवन गाळी तेमाथी सहज स्फुरता आत्मज्ञानने
कूच आदरी छे अने आ बधा मनोहर हृदयोमा
केवळ ॐ अर्हम् ना पवित्र मंत्रने स्थाप्यो छे
शक्तिओ महान् छ अनंत गंभीरनी छे आत्माने
शिखरे स्थापनारो ए मंत्र छे एथी तेमणे पकी रा
तेमना समागममा आवनार दरेक राजा महाराजा,
के रेहुत, गरीब के तवंगर सौने तेमनो एकज संदेश

"प्रमाद न सेवो! जीवनमाथी जेटली प
'ॐ अर्हम्' ना उच्चार-जाप पाछळ खरचशो ते
अणमोली पळो छे एज तमारा जीवननु भा
माटे बनी शके तेटली निवृत्ति लई आत्मचिंतनम
ॐकारना जापमा तल्लीन बनो!"

आ तेमनो आदेश छे जीवननु तारण जे
ते शीखे!

— ›~ ' ण्या जर्हीया आबाद रीते वर्ता ः• जन्मो ने म तेमनी नीरखी छे आ ध्र्ं ा । तथी जे मन्त्र ' ॐ अर्हं ' नी ी ७ नन प्रसिद्ध रीताथी जरूर अलौकिक नम छ

आ दृष्टिये 'ॐ' कार उपर जे कंईक मळी आव्यु छे ते आ नानकडी पुस्तिका रूपे आजे हु प्रदर्शित करू छु

आशा छे के जेमना कानें ॐकारनो एकवार पण ध्वनि पड्यो होय ते दरेक भाई बहेन आनो लाभ उठावे

अतमा आ नानकडा पुस्तकने अग, जे जे पुस्तक, अने लेखनी ज्या ज्याथी, जेमना तरफथी ॐकारना माटे मने जे मदद मळी छे, तेमनो आभार मानी विरमु छु
ॐ अर्हम्

जीवणचद धरमचद

SHANTI VIJAYJI has wonderful eyes naturally large and dilated. They gaze through one as if they read innermost thoughts. He is very dark but strangely enough in meditation his colour grows several shades fairer. I have seen this phenomenon personally. A small speck of light called Puraka Bindu in Sanskrit can be distinctly seen flashing from eye to eye across the nose and the two petalled Lotus of Yoga called the Agna Chakra shows faintly on the forehead.

ELIZABETH SHARPE

परमयोगी महाराज श्री शातिविजयजी, मारा धारवा प्रमाणे एक महान योगी छे, योगनो मार्ग तेमना हाथमा सारो आव्यो छे मारे तेमनी साथे जे वात थई छे, तेमा एक मुद्दानी वात जे योगमा जरूरियातवाळी छे, ते तेओश्री बराबर जाणे छे, अेम मने खात्री थई छे बाकी तो ते एक त्यागी उच्च वेरागी, एकात सेवनार, निस्पृही, सर्व जीवो तरफ प्रेम राखनार, पोताना शुभ सकल्पथी विश्वनु भलु इच्छनार, विनयी, नम्रतावाळा अने मायाळु स्वभावना छे ते गुणो मारा बे दिवसना परिचयमा जणाया छे क्रियामार्ग जे अत्यारे साधु समुदायमा प्रचलित छे, तेमा तेओ थोडी प्रवृत्ति करता होय ते बनवा योग्य छे केमके तेओनो स्वरुपस्थिरता, जाप अने ध्याननो अभ्यास सतत चालु होय तेने लई आ कार्यथी पोतानी विशेष विशुद्धि मेळवे छे, अेटले बाह्यक्रियानो आतर-क्रियामा समावेश थई जाय छे जेम पाचमी चोपडी भणनारे चोथी चोपडी छोडवी जोईये ते न्याये ते योग्य लगे छे तेमनु दर्शन आनदप्रेरक छे

SHANTI VIJAYJI has wonderful eyes naturally large and dilated. They gaze through me as if they read innermost thoughts. He is very dark but strangely enough in meditation his colour glows several shades fairer. I have seen this phenomenon personally. A small speck of light called Taraka Bindu in Sanskrit can be distinctly seen flashing from eye to eye across the nose and the two petalled Lotus of Yoga called the Agna Chakra show faintly in the forehead.

ELIZABETH SHARPE

परमयोगी महाराज श्री शातिविजयजी, मारा धारवा प्रमाणे एक महान योगी छे, योगनो मार्ग तेमना हाथमा सारो आव्यो छे मारे तेमनी साथे जे वात थई छे, तेमा एक मुद्दानी वात जे योगमा जरूरियातवाळी छे, ते तेओश्री बराबर जाणे छे, अेम मने खात्री थई छे बाकी तो ते एक त्यागी उच्च वैरागी, एकात सेवनार, निस्पृही, सर्व जीवो तरफ प्रेम राखनार, पोताना शुभ सकल्पथी विश्वनु भलु इच्छनार, विनयी, नम्रतावाळा अने मायाळु स्वभावना छे ते गुणो मारा बे दिवसना परिचयमा जणाया छे क्रियामार्ग जे अत्यारे साधु समुदायमा प्रचलित छे, तेमा तेओ थोडी प्रवृत्ति करता होय ते बनवा योग्य छे केमके तेओनो स्वरुपस्थिरता, जाप अने ध्याननो अभ्यास सतत चालु होय तेने लई आ कार्यथी पोतानी विशेष विशुद्धि मेळवे छे, अेटले बाह्यक्रियानो आतर-क्रियामा समावेश थई जाय छे जेम पाचमी चोपडी भणनारे चोथी चोपडी छोडवी जोईये ते न्याये ते योग्य लगे छे तेमनु दर्शन आनदप्रेरक छे

× × ×

मैं मारी जीदगीमा कोई अद्‌भुत वस्तु जोई होय तो ते योगनिष्ट महात्मा शांतिविजयजीज छे तेओ बाह्यत केवा मामुली देखाय छे, अने ज्यारे पोते वातो करे छे त्यारे एक साधारणमा साधारण माणस बोलतो न होय अेम लागे छे ? देखाव पण तेओ श्रीनो कुदरती जेवोज छे, अेटले जगत् सहेजमा भुलथाप खाई जाय छे अेमा काइ नवाई नथी पण मने तो अेम लाग्यु के आतो कोई उच्च कोटीनो महान् अध्यात्मिक ज्ञाननो भडार छे अेवा महान् पुरुषोने आपणे स्हेजे ओळखी शकीअे नही कारण के तेओ पोते योगमा तेमज अध्यात्मिक ज्ञानमा, अेटला बधा उडा उतरेला छे के अढार अढार मास सुधी तेओना पासे रहीने एक विद्वान् माणस पण सपुण समजी शकतो नहि हालना आटला बधा साधुओमा अेओ पोतेज योग क्रिया तथा अध्यात्मिक ज्ञानमां धानतमा मोखरे छे जेवा महान् योगिश्वरने समजवा माटे महान् शक्तिवालो आत्मा घणा लाबा टाईमेज काईक स्हेज समजी शके छे

आचार्य श्री विजयकेसर सुरीजी

महाराज श्री शान्ति विजयजी महाराजना समागममा आववाने तथा तेओ श्रीनो उपदेश साभलवाने हु पण भाग्यशाली थयो छु तेओश्री एक उत्तम योगी पुरुष छे, अने तेमनु चारित्र घणी उची कोटीनु छे अेवा महर्षिना प्रवचनो समुदाये साभळवाथी जेम औषधिथी शरीरनु दर्द अने मलीनता दुर थई आरोग्य अने निर्मळ बने छे, तेम जन समाजनी मानसीक मलीनता दूर थई जीवन आरोग्य अने सुखी बने छे अेवा महान् पुरुषो आपणामा वधारे अने वधारे थाओ अने तेमना पवित्र जीवन अने आदर्श उपदेशथी जन समुदायनु जीवन वधारे नीतिमान अने सुखमय बनो अेवी मारी चाहना छे

महाराज लखधीरजी

मोरबी

योगनिष्ट मुनी महाराज श्री शान्तिविजयजीना समागममा हु छेल्ला छ सात वर्षथी आव्यो छु ते उपरथी हु जोई शक्यो छु के तेओश्री एक उच्च कोटीना महा पुरुष छे योगाभ्यासथी प्राप्त थती दिव्य दृष्टि (Clair boyance) तेओश्रीए मेलवी छे अने तेना बे दाखला मारा अंगत अनुभवथी मे जोया छे तेओश्री सरल प्रकृतिना एक योग-परायण संत पुरुष छे हु इच्छु छु के अधिकारी सज्जनो तेमना पवित्र संबंधमा आवी तेमनी आत्मिक उच्चतानो लाभ मेलवे

सर दोलतसिंहजी महाराजा.

लींबडी

मैं दुनीयाना दरेके दरेक देशनी मुसाफरी करी, अने हु घणा घणा महान् पुरषोने मली छु, अने छेवटमा पुज्य गुरुदेव महाराज शान्तिविजयजीने पण मली, हमारा पाश्चिमात लोकोमा अेटलु तो ठीक छे के, हमो बराबर समजीनेज मानीये छीअे हमो हमारा मनने पुछीअे छीअे के (Doubt) दरेक वस्तुमा शु छे मीस मेयोये मधर इन्डीया नामनी जे बुक लखी छे तेमा लखता अेणे मोटी भुल खाधी छे, कारण के हिंदमा हजीअे आवा देवरत्नो छे, तो पछी अेणे शु बुद्धिथी अे पुस्तक लख्यु हशे, हवे तो हु अेने बराबर जवाब आपीश अेटले अेनी भुल समजाशे अने जगत सत्य वस्तु सारी रीते समजी सकशे

Guruji is a God, no doubt
(गुरुनी परमेश्वर छे, तेमा शक नथी)

मीस–माइकल पीम

तत्री

श्रीव्युट हेरोल्ड. (न्यु योर्क)

दुनियामा जो कोई पवित्रमा पवित्र वस्तुमें जोई होय तो फक्त शातिविजयजीज छे

धर्माचार्य दर्शननिधी स्वामी रामदास.

एम ए साउथ केनेरा

अरे मने ज्यारे लाखो साधुओ बावाओ फकीरो छपन लाख याद आव्या त्यारे मने विचार थयो के कांये माहोमांहे चीसकारी पाडता अने गुरका गुरकी करता अने हरामनी रोटी खानाराओ ओ क्या अने आ महान् पुरुष क्या ? आत्मानी साक्षीओ कहु छु के, में मारी जींदगीमां खरेखरो आनंद मेळव्यो होय तो आ महान् पुरुष शान्ति विजयजीना चरणोना ज्यारे में दर्शन कर्या त्यारेज मने आनंद थयो छ भूतकालमा ने महान पुरुषो थई गया छे ते कोटीमा पोते अत्यारे शहेनमा आवी उभा छे, जेमनो जे मोलो देखाव जे उपरनो देखाय छे के आतो कोई छोकरा जेवा बाबा भोला देखाय छे, पण ओ महान् पुरुषना अंदरना तत्वो घणाज उत्तम, अने जेनी गतिपण गहन छे, ओ महान् पुरुषने ओळखवा माटे महान् शक्तिवालो होय तो पण काइक अंदेशन लावा टाइमने समजी शके छे, कोण कहे छे के भारतमा अमृत गंगा नथी ? कोण कहे छे के दुनियामा कल्पवृक्ष नथी ? में तो जेम मान्यु हतु के, ओ तो कोइ मंत्रवादी देवी उपासक हशे, पण अेतो कली कालमा अलौकिक योगनो खरेखरो अनुभव मेळवेला महान् पुरुष छे अरे ! में तो आटला वरस सुधी भुलन खाधी, कारण के मारी मति कल्पनाओ तो मने खरेखरो दगो दीधो, कारण के मने ओळखता आटला वरस लागी गया छु ओ महान्

पुरुषनी तारीफ नथी करतो, पण जे सत्यनो संदेसो जगत्ने अधकारमाथी अजवालामा लाववा माटे कहु छु जे महान् पुरुषना गुणो तो घणा छे, पण केटलु लखी शकाय ? मने तो लाग्यु के पोते बीजाना मनना विचारो बहु सारी रीते जाणी शके छे अरे ? कहेवु न कहेवु तो ऐमनी मरजीनी वात छे ऐमने माटे मोर शु शब्दो सबोधवा ते काई हु समजी शकतो नथी

प्रभुदास अमृतलाल मेहता



दुनियामा महान् आदर्शमा आदर्श पुरुष होय तो ते एक शातिविजयजीज छे

+ + +

कुदरती शक्तिओ खरेखर पुज्य गुरुदेव शाति-विजयजीनजे प्राप्त थई छे

+ + +

जो मनुष्य गुरुजीनो खरेखरो दावो करी शके तो शातिविजयजी खरेखरा गुरुजी कही शकाय

लाला लजपतरायना उर्दू वंदेमातरम् पत्रमाथी

लाहोर

ज्यारे इदोरथी हमो आबु जवा माटे नीकळ्या, त्यारे टाइम्स ओफ इन्डिया वाचता तेमा आबुमा महात्मा श्री शान्तिविजयजी रहे छे अने ते एक (वंडरफुल) अजब शक्ति धरवे छे, कारण के तेओ श्रीने युरोपीयन, पारसी, जैन, मोहमेदन, अने हिंदु, दरेके दरेक पुज्य माने छे, त्यारे हमारा मनमा पण वीचार आव्यो के, हमारे पण अेओ श्रीने मळवु जोइअे, हमो पण त्या गया, गुरुदेव शान्तिविजयजीने जोया, त्यारे हमोने मनमा थयु के, अे कोई सारा माणस तो छेज, हमो काई पुजनिक आदर्श तरीके मानता नही (त्यारा टाइमे अनुभवथी वंडरफुल लखेलु) पण हवे हमो तो कोई अजब देवरत्न समज्या छीअे, अने जेम जेम अनुभव वधतो गयो, तेम तेम हमोने विचार थयो के, अेतो कोई अजब पुरुष छे आतो देवरत्न पुरुष छे ने मनुष्य रुपमा देव पुरुष छे अे महान् पुरुषने ज्यारे आपणे जेवी जेवी भावनामा जोईअे छीअे तेवी तेवी रीते तेओ पोते देखाय छे प्रथमथीज दुनियाने अध विश्वासमा वीना साधुओ मळेल छे, अेटले आपणे आवा महान् देव पुरुषने ओळखी शक्या नही, कारण के आजे साधुओ माटे जगत् अविश्वास करे छे अे वात बरोबर छे, दुनियामा ढोळ करनाराओ अने पंडिताई अने वाक्य चातुर्यता बतावनारा घणा पुरुषो साधु वेषमा जगतने

भरमावे छे, अने अेवाओने पण अध श्रद्धालु माननारा अने पुजनाराओ दुनियामा मली जाय छे अेमनो उपरनो देखाव तदन भोलो अने सादो छे, ज्या सुधी आपणने पुर्ण अनुभव नहि थाय त्या सुधी अेमज लागशे के अे तो तदन मामुली साधारण माणस छे गुरु श्री शान्तिविजयजीनो उपरनो देखाव जुदो अने अदरना गुरुदेव शान्तिविजयजी जुदा छे, आजे दुनिया तो उपरनो डोल डमाक जोईने अध श्रद्धामा फसाई जाय छे, अने ज्यारे पाछलथी अनुभव थाय छे त्यारे श्रद्धाहीन बनी जाय छे साधुनु नाम जे पवित्र छे अेनाथी पोते काई पवित्र थतो नथी धारोके कोईनु नाम राम-कृष्ण रीखव, जरथोस्त महमद, अने कोईनु नाम इसु छे हवे अेवा नाम धारण करवाथी काई पोते तेवा महान् पुरुष थई शक्ता नथी धारोके सघला साधुओना वेषज पुजनिक गणाता होय तो, पछी नाटकमा जेम राजाराणी थाय छे तेवीज रीते तेमज बकराना उपर सिहनु चामडु चढाववाथी काई बकरो सिंह थतो नथी, तेवीज रीते सिह जेवो आत्मा (जीव) बलवान होयतोज खरेखरो सिह बनी शके छे धारो के नाटकमा एक श्रीमत माणस ज्यारे फारसमा उतरे छे त्यारे मामुली माणस थाय छे, तेथी ते काई मामुली न कहेवाय तेवीज रीते दुनियाना धर्माचार्योने साचा सत बनावी आप्या होततो आजे दुनिया

मुक्ति पुरी वनी होत अने दुनियाना महान् पुरुषोने ओळ-
खाव्या होत ओ महान् आत्माओ ओळखवा माटे पण
महान् विचारक थवानी जरूर छे ज्यारे ओ महान् पुरुषना
(ब्लेसींग) आशीरवाद पडे तो दुनियाना मोटा मोटा नामी
नामी डॉक्टरोओ पण जेणे माटे आशा छोडावी दीधी हती
तथा जोतिषीओ पण जेने माटे हाथ खखेरी नखाव्या हता,
तेवाओ पण ओमना आशीरवाद वडे सारा थई गया छे
जेने आपणे साधु कहीये, जेना दर्शन वडे आपणु पाप नष्ट
थई जाय, ओ साधुता काई जुदीज वस्तु छे गुरुदेव शान्ति-
विजयजीने तो बधा ओळखे छे, पण आपणी काई महान् पुन्याई
हशे तोज अवरना गुरुदेव शान्तिविजयजीने ओळखी शकीशु
ते दीवसे आपणे (ब्लेसींग) खरेखरू जाण्यु कहेवाशे
विशेष शु कहु ? ओमनो आशीरवाद ओटलो बधो बल्वान
छे के जे केसने माटे दरेके दरेक माणसोओ आशा छोडी
दीधी हती, तेनो महान् रोगपण मुक्त थयो, ओ मारो पोतानो
खुद अनुभव छे हतो दुनियामा महान् योगिश्वर तेने समजु
छु अहा हा दुनियामा आजे ओवा देवरत्नो छे जेने कोइ
ओळखी शक्या नथी, कारण के ओमनी पासे सिंह अने
वाघ जेवा क्रुर जनावरो पण पाळेला जनावरोनी माफक
आगी बेसी जाय छे जेवा महान् पुरुषोनो भेटो थवो काई

साधारण वात नथी एकवारतो दरेके दरेक मनुष्ये जरूर अेमना दर्शन करवा जोईअे अेवी मारी दरेके दरेकने भलामण छे अेमनो जे मार्ग छे ते सत्य छे मारू ते सत्य नही, पण सत्य तेज मारू छे, अेवो गुरुदेवनो दरेकने एकसरखो उपदेश छे गुरुदेव पोते जाते रजारी कुलमा जन्मेला अने दरेके दरेक प्राणी उपर समभावना राखवी अेवो अेओश्रीनो उपदेश छे, अने विश्वनु कल्याण थाओ अेवी भावना छे

मराठी मासिक मनोरजनमा
कीर्तना लेख उपरथी



महाराज श्री शांतिविजयजीना बोध वचन

कगालमा कगाल मनुष्यमा पण दिव्यता गुप्तपणे बेठेली छे हु अदरने पूजनारो छु

+ + +

वस्तुनु पिछान करवानु पुस्तको द्वारा थई शके पण पुस्तकोनु ध्येय तेन आत्मज्ञान ज्ञाननी हद ते परमपद

+ + +

तत्वने समज्यो नथी त्यासुधी उपर उपरनी बधी एकटांग छे

+ + +

जे सत्य छे ते मारो धर्म छे, बहारनी तकलीफ थी चीसादमा ? अदरनी शान्ति वगर नकामु छे

+ + +

विवेकानद ए पडित हता अने स्वामि राम ए जबरजस्त आत्मार्थि हता

+ + +

प्रवृतिमाथी निवृती ल्यो एटले निवृतिमय प्रवृति करो

× × ×

નની શકે તો તમારા જીવનથી ને છેવટે તમારા વિચારોથી બીજાને પવિત્ર કરો

× × ×

મહાનુભાવ મારે જે જોઈએ છે તે તારી પાસે નથી અને તુ કૃપા કરીને મને આપવા માગે છે, તેની મને પરવા નથી

× × ×

વિશ્વ મારૂ મિત્ર છે ને હુ સૌનો મિત્ર છુ

× × ×

હુ ત્યાગી છુ એ ભાવનાનો ત્યાગ તેજ સાચો ત્યાગ રહી શકાય શાન્તિમય જીવન એજ ખરૂ જીવન છે એકાન્તમા આનદ છે ॐ અર્હમમા પરમ સુખ છે

× × ×

જેનોનુ જીવન એવુ હોય કે જેની દેવતાઓ પણ યાત્રા કરવા આવે, એટલુ જીવન જીવજો

× × ×

ભાગ પીધેલા મનુષ્યને જેમ છાશ પિતા નિસો ઉતરે છે, તેમ આ સસારમા સસારની ભાવનાથી ખરડાએલા આત્માને શુદ્ધ કરવા ॐकार મત્રના જાપની જરૂર છે તેથી આત્માનુ વાતાવરણ શુદ્ધ થાય છે સહુ આત્માને શુદ્ધ કરવા મથજો

नवकार सूत्र

नमो अरिह ताण

नमो सिद्धाण

नमो आय–रियाण

नमो उवज्झायाण

नमो लोॲ सव्व साहुण

एसो पच नमुक्कारो

सव्व पाव पणासणो

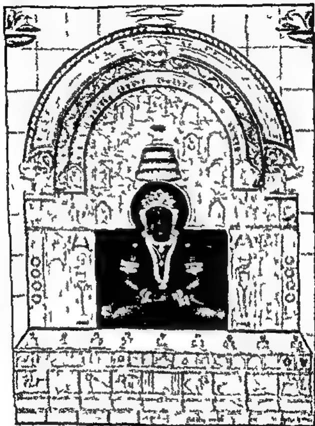
मगलाणाच सव्वेसि

पढम हवई मगल

पच दिय सूत्र.

पचि दिअसवरणो
तह नव विह बभचेर गुत्ति धरो
चउ विह कसाय मुक्को
इअ अठारस गुणेहि सजुत्तो
पच महव्वयजुत्तो
पच विहायार पालण समथ्थो.
पच समिओ तिगुत्तो
छत्तीस गुणो गुरू मज्झ

श्री केशरियानाथजी (ऋषभदेव)



प्रकाशक,

श्री मेघरा[illegible] भंडार

Phoenix P

ॐकार.

संसारमें सुख और शान्ति किसे नहीं चाहिये? संसारके सभी जीव सुख और शान्ति प्राप्त करनेके लिये, अपनी २ शक्तिके अनुसार प्रयत्न कियाही करते हैं। समस्त संसारी जीवोंको सुख एवं शान्तिकी कामना होती है। हमारे प्राचीन अनेक विद्वान् मुनियोंने अपने विरचित पुस्तकोंमें, जनता उनसे यथाशक्ति लाभ प्राप्त करती रहे, इस लिये कई मंत्रोंका उल्लेख किया है। उन मंत्रों मेंसे कुछ २ तो खासकर अमुक अभ्यासियों, मुमुक्षुओं और साधकोंके लिये उपयुक्त हैं। उनकी साधना आदिक प्रक्रिया गुरुगम्यके तौरपर गुप्तही रखी गई हैं। परंतु कितनेक मंत्र और जप उन्होंने मुमुक्षु जनों एवं जनताके कल्याणके लिये अपनी पुस्तकोंमें लिखे हैं। उनका उपयोग हरेक मुमुक्षु जन व जनता हर समय करके अपना अभीष्ट कल्याण सिद्ध कर सकते हैं। उन विद्वान् मुनि-महोदयोंके वे मंत्रतंत्रादि, साधकका आन्तरिक और बाह्यिक कल्याण करनेवाले हैं। महान् परोपकारी पुण्य पुरुषोंके उच्चारित साधारण शब्दोंमेंभी अद्भुत सामर्थ्य होती है। ऐसा होते हुए खास विशिष्ट उद्देश्य या अभिप्रायको लेकर, विशिष्ट अक्षरोंकी योजना द्वारा नियोजित मंत्रयुक्त

पदोंकी सामर्थ्यके विषयमें क्या कहा जाय ? उनका फल हरकके लिये कल्याणकारक होताही है। ऐसे २ मन्त्र-पदों, उनके योजक महर्षि-महानुभावोंके अलौकिक तप, त्याग और तेनके त्रिविध शक्तिके सपुटद्वारा परिवेष्टित हुए होते हैं और उसी शक्तिको लेकर उनमें अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न हो जाती है। जिस प्रकार, जड जैसी गिनी जानेवाली रसायन विद्याके एक सामान्य नियमके अनुसार, नेगेटीव और पोझीटीव स्वभावकी दो धातुओंके टुकडोंको, जब तज्ञ योजक यथोचित प्रकारसे जोड देता है, तो उनमें अद्भुत एव अलौकिक शक्तिका आश्चर्यजनक सचार हो जाता है। उस शक्तिके द्वारा या उसके बलपर, लाखों मनुष्योंके शारीरिक बलसे एव दीर्घकालीन परिश्रमसे-उद्योगसेभी नहीं हो सकता वही कार्य, बहुतही सरलतासे और एक क्षणमात्रमें भली भाति, बन जाता है इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है। इसी प्रकार आध्यात्मिकविद्याके नियमानुसार, पृथक् पृथक् स्वभाववाले वर्णों अथवा अक्षरोंको, उनकी सामर्थ्यको, भली भाति जाननेवाले योगीजन विशिष्ट रीतिसे, जोड देते हैं तो उनमें विद्युत् शक्तिके अनुसार किसी अगम्य शक्तिका सचार हो जाता है। उसी शक्तिके द्वारा साधक जन अपना अभिष्ट कार्य सरलतासे सिद्ध कर सकते हैं।

श्रद्धा

ससार परिवर्तनशील है। आज हमारे इस भारत-वर्षमेंसे तपश्चर्या, त्याग और तेजकी त्रिविध शक्ति धारण करनेवाले आध्यात्मिक पुरुष बहुधा अदृश्य हो गये हैं।। अतएव हम लोगोंको इस आध्यात्मिक सामर्थ्यकी कल्पना तक होना, असमव हो गया है। दूसरी ओर देखते दिखाई पडता है कि तप और त्यागके मिथ्या आडम्बरके नामपर केवल उदरपूर्तिकी अभिलाषा रखनेवाले दम्भी लोगोंके दाम्भिक जीवनको देख देखकर मुमुक्षु जनोंमें-सज्जनोंमें, सत्पुरुषोंकी सामर्थ्यमें अश्रद्धा उत्पन्न हो रही है। अतएव ऐसे अनेक साधनोंकी यथोचित आराधना करनेकी ओर किसीकी प्रवृत्ति या प्रयत्न नहीं हो रहे हैं। कहा जाता है कि जिस प्रकार धर्म बुद्धिका विषय है, पर श्रद्धाका विषय है, इसी प्रकार मन्त्र सामर्थ्यभी बुद्धिका विषय नहीं है परतु वह है श्रद्धाका विषय। श्रद्धाशील आत्मा (मनुष्य) ही मन्त्रजनित सामर्थ्यका फल प्राप्त कर सकती है। मन्त्रोंसे श्रद्धाहीन मनुष्यको उससे कोई लाभ नहीं हो सकता। आध्यात्मिक सामर्थ्यकी प्राप्तिके लिये सयम और श्रद्धा, इन उभय तत्त्वोंकी जोडी चाहिये। श्रद्धा, म[illegible] शक्तिकी जननी है। श्रद्धा और यम, दोनोंके योग्य सम्मेलनसे आत्मिक-सामर्थ्य

उत्पन्न हो जाती है। इस सिद्धान्तके अनुसार मंत्रपद और उसकी सामर्थ्यका विचार करते हैं तो समक्षमें आता है कि उन मंत्र पदोंका योजक संयमशील होना चाहिये। और उसका ग्राहकभी श्रद्धावान् होना चाहिये। संयम शून्यके द्वारा योजित और श्रद्धाशून्य द्वारा ग्रहित मंत्र कुछभी सामर्थ्य उत्पन्न नहीं कर सकता, यह सर्वथा-सब प्रकार सही है। हमारे पूर्वके प्राचीन पवित्र परोपकारी। पुण्यवान् पुरुष, महा मना महर्षि लोग, मुमुक्षु जनोंके हितार्थ कितनेक मंत्रपदोंकी योजना कर गये है। उनमें संयमका ओजस् तो अंतर्निहित है ही। परंतु यदि साधक जनोंमें श्रद्धाकी पात्रता यथेष्ठ न हो तो इच्छित फलकी प्राप्ति होही नहीं सकती। कहाभी है कि–

श्रद्धा फलति सर्वत्र

(सर्वत्र श्रद्धाही फलिभूत होती है।)

प्यारे पाठकों !

वृद्ध जनोंके इस वचनको, इस विषयमें तो सर्वथाही सत्य समझना चाहिये।

अब हम उन इच्छित फलप्रद, मंत्रोंमेंके, ॐकार मंत्रपद पर दो दो बातें लिखते हैं।

ॐ क्या है ?



मंत्र शास्त्रोंमें ॐकारको प्रणव कहा जाता है। सबके सब मंत्रपदोंमें यह ॐ आद्यपद है। सभी वर्णोंका यह आद्यजनक है। इसका स्वरूप अनादि व अनंत गुणोंसे युक्त है। शब्द सृष्टिका यह मूल-बीज है। ज्ञानरूप उज्वल धवल ज्योतिका यह केन्द्र है। अनाहत नादका यह प्रतिघोष है। परब्रह्मका द्योतक और परमेष्टीका वाचक है। सभी दर्शनोंमें और सभी तंत्रोंमें यह समान भावसे व्यापक है। योगीजनोंका यह आराध्य अधिष्ठान है। सकाम उपासकोंको यह अभिलाषित-इच्छित फल देता है और निष्काम उपासकोंको आध्यात्मिक मोक्षप्रदान करता है। हृदयकी धडकनके जैसे यह निरंतर योगीजनोंके अंतःकरणमें स्फुरायमान होता है।

ॐकारका स्थूल स्वरूप

निम्नलिखित श्लोक ॐ के स्थूल स्वरूपका यथार्थ वर्णना बताये देता है। यथा—

ॐकार बिन्दु संयुक्त नित्य ध्यायन्ति योगिन ॥
कामद मोक्षद चैव ॐकाराय नमो नम' ॥

अर्थ –बिन्दु संयुक्त जो ॐ है, वह सब काम तथा मोक्ष देनेवाला है । इससे योगीजन इसीका ध्यान करते रहते हैं और इसीका वदन (नमस्कार) किया करते हैं ।

ॐकारका महात्म्य

इसके महात्म्यका वर्णन वणनातीत है तथापि इस प्रणवाक्षरका वर्णन करते हुए लिखा गया है कि–

स्मर दु खानल ज्वाला प्रशान्तेर्नवनीरदम् ।
प्रणव वाङ्मयज्ञानप्रदीप पुण्यशासनम् ॥

श्री शुभचद्राचार्यकृत ज्ञानार्णव
परिच्छेद ३८ वा ।

अर्थ –हे मुने ! तू प्रणव नामक अक्षरका स्मरण कर । कारण कि यह प्रणवाक्षर दु खरूपी अग्निकी ज्वालाकी शान्त करनेके लिये नये मेघोके समान है । तथा वाच्मय याने शास्त्रीय ज्ञानको प्रकाशित करनेके लिये प्रदीप है और है पुण्यका पवित्र शासन !

यस्माच्छब्दात्मकं ज्योतिः प्रसूतमतिनिर्मलम् ॥
वाच्य-वाचकसम्बन्धस्तेनैव परमेष्ठिनः ॥

अर्थः—इस प्रणवाक्षरसेही अतिशय निर्मल ऐसी ज्योति याने ज्ञानराशि उत्पन्न हुई है। इसीसे इसका परमेष्ठीके साथ वाच्य-वाचक सम्बन्ध है। इसका वाच्य है परमेष्ठी और यह है, परमेष्ठीका वाचक—

ॐ का चिन्तन किस प्रकार करना

हृत्कञ्जकर्णिकासीनं स्वरव्यञ्जन वेष्टितम् ।
स्फीतमत्यन्तदुर्धर्षं देवदैत्येन्द्रपूजितम् ॥
प्रक्षरन्मूर्ध्निसङ्क्रान्त चन्द्रलेखामृतप्लुतम् ।
महाप्रभावसम्पन्नं कर्मकक्षहुताशनम् ॥
महातत्त्वं महाबीजं महामन्त्रं महत्पदम् ।
शरच्चन्द्रनिभं ध्यानी कुम्भकेन विचिन्तयेत् ॥

अर्थ.—ध्यान करनेवाले संयमीको, हृदयकमलकी कर्णिकामें विराजमान, स्वर और व्यञ्जनोंसे परिवेष्टित, उज्वलाकार, अत्यंत दुर्धर्ष, देवताओंके असुरोंके इन्द्रद्वारा पूजित, सिरपर रही हुई और चन्द्रमाकी लेखाके अमृतसे

सिंचित, महा प्रभाव सम्पन्न, कर्मरूप वनको जलाटालनें अग्निके समान, ऐसा यह महा तत्त्व, महा बीज, महा मंत्र और महान्पद स्वरूप तथा शरत्कालके चद्रमाके समान गौरवर्ण धारण करनेवाले, ॐकारका ध्यान कुंभक प्राणायामके द्वारा करना चाहिये।

ॐ के चिन्तनकी फल प्राप्ति।

सान्द्रसिंदुरवर्णाभ यदि वा विद्रुमप्रभम्।
चिन्त्यमान जगत्सर्वं क्षोभयत्यभि सगतम्॥
जाम्बूनदनिभ स्तम्भे विद्वेषे कज्जलत्विषम्।
ध्येय वश्यादिके रक्तं चद्राभ कर्मशातने॥

अर्थ इस प्रणवाक्षरका गाढे सेंदुरके रग जैसे रूपमें अथवा मूगके जैसे स्वरूपमे ध्यान करनेसे समूचे ससारको क्षोभित किया जा सकता है। स्वर्णके समान पीले स्वरूपमे ध्यान करनेसे चाहे जिसे स्तंभित किया जा सकता है। काजल जैसे श्याम-काले-स्वरूपमे ध्यान करनेसे चाहे जिसे व चाहे जैसे शत्रुका नाश किया जा सकता है। लालवर्णमे ध्यान करनेसे चाहे जिसे वशीभूत किया जा सकता है। चद्रमाके जैसे शुक्ल स्वरूपमे ध्यान करनेसे चाहे जैसे दुष्ट कर्मोंका नाश किया जा सकता है।

श्री सिद्धचक्रजी उर्फे नवपद्जी मडल



ॐ का स्वरूप

जैन मन्त्रवेत्ता महात्मा पुरुषोंके मतानुसार इस महान् मन्त्रके "अ अ आ उ म्" इन पाच आद्याक्षरोंके सयोजनसे इस (ॐ) प्रणवाक्षरका स्वरूप बना है । अतएव इस मन्त्रपदका जप ध्यान करनेसे नमस्कार महामन्त्रका जप करने जितनाही फल प्राप्त होता है ।

ॐकारका सूक्ष्म स्वरूप

इसमें जो ॐकी आकृति दी गई है उसमें पाच बिंदु हैं। वे पाचें बिंदु परमेष्ठीके पाच स्थानोंके सूचक हैं। चन्द्ररेखाके ऊपर जो बिन्दु है वह सिद्धोंका स्थान है। चन्द्रकलागत बिंदु, अरिहंतका स्थान है । उसके नीचेका बिन्दु आचार्यका स्थान है। मध्य रेखाका बिन्दु उपाध्यायका स्थान सूचित करता है। और निम्नरेखागत बिन्दु साधुके स्थानका दर्शक है। सिद्ध ससारके सर्वोच्च स्थानपर परम शून्यमें विराजित हुए हैं। अर्हत् ससारमें अलिप्त ऐसे उर्ध्व आध्यात्मिक आकाशमें विराजमान है और वह अपने तेजसे पृथ्वीतलको प्रकाशित करता है । ज्ञानामृतकी शीतल किरणोंसे, उत्तम हुई आत्माओंको-अन्तरात्माओंको शान्त करता है। सदाचारके उपदेष्टा आचार्यो-तत्वज्ञानीयों जनताके

अग्रभागमें है और वे अपने आदर्श आचारों एवं विचारोंसे जनताको सन्मार्गपर चलाते हैं। सम्यक् ज्ञानके अध्यापकों उपाध्यायों, जनताके बीचमें रहकर निष्काम भावसे उसे अपने ज्ञानका अक्षय ज्ञानदान करते है। स्व-परके कल्याणकी साधनामें तल्लीन हुए साधु-पुरुष-सन्तजन एकान्त स्थानमें रहकर अपने साधुस्वभावसे, ससारको नीचेसे ऊपरको चढानेके लिये, अदृष्ट प्रेरणाकी शक्ति प्रदान करते रहते है। इस प्रकार इन पाचों स्थानोंका सूक्ष्म रहस्य है।

इसका दूसरा क्रम

ॐकारके इस सूक्ष्म-रहस्यको दूसरे क्रमसेभी बताया जा सकता है और वह इस प्रकार है —

सर्वोच्च और सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त करनेवाली मुमुक्षु आत्मा कौनसे क्रमसे उत्क्रान्तिके सोपानपर आरूढ होकर उच्च पद प्राप्त करती जाती है, उसकाभी ॐकारकी इस आकृतिमें सूक्ष्म सूचन रहा हुआ है। मुक्ति प्राप्त करनेके अभिलाषियोंको सबसे पहले साधु याने साधक होना पडता है। साधक अवस्थामें रहते हुए, अमुक एक प्रकारकी ससारका कल्याण करनेवाली भावनाओंको सुसस्कृत बनाकर फिर उसे जनताका अध्यापक बनना होता है। अर्थात्

सम्यग्ज्ञानका अध्ययन करानेवाला अध्यापकका पद ग्रहण करना पडता हे । इस प्रकार जनताके शिक्षा प्रदान करते हुए अपनेको जो कुछ विशेष अनुभव प्राप्त हो जाय, जन-कल्याणका जो सत्य मार्ग सूझ पडे, तदनुसार फिर उसे अपने आचारके अनुकूल जनताको उच्च स्थानपर पहूचानेवाले मार्गदर्शक याने आचार्यके पदका स्वीकार करना होता हे। आचार्यके नाते अपने कर्तव्यकर्म, जो पूरे पूरे किये करते हैं वेही फिर अर्हत्-जगत्पूज्यके पद पर, वह आत्मा, पहूच सकता है ओर अन्तमें परमात्मदशास्वरूप सिद्ध-स्वरूपमें विलीन हो जाती है । इस प्रकार पच परमेष्ठीपदमें आध्यात्मिक विकास क्रमका जो विचारतत्त्व गर्भितरूपमें रहा है, उसका इस ॐकी आकृतिमें सूचन किया गया है ।

ॐकारमें क्या २ सूचित होता है ?

ॐकार तीनों लोकका बीज है ।

ॐकारमें पाच परमेष्ठी हैं और उसीमें अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सबके सब साधु हैं ।

ॐकारको हरेक धर्मानुयायि मुख्य मानते है ।

ॐकार सभी मगलोंमें प्रथम मगल है । शान्तिको देनेवाला है । इसका ध्यान करनेसे रोग, शोक, क्लेश, आधि, व्याधि और उपाधिन्आदिकका नाश होता है । इसीका ध्यान करनेसे आठो कर्मोका नाश होता है और मुक्ति प्राप्त होती है ।

ॐकार तीनों लोगोका एक नक्शा है । जिस प्रकार नकही नक्शेमे समूचे ससारका समावेश हो जाता है, उसी प्रकार इस ॐकारमें तीनों लोकका समावेश हो जाता है । अतएव हरेक प्राणीको ॐकारका ध्यान करना चाहिये ।

ॐकारके महात्म्यपर एक कथा

एक बार मालव पति महाराजा भोजराजाने, अपने ५०० पडितोंसे कहा कि "मेरी आयु तो थोडी है । कर्म तो अनादिकालसे लगे हुएही हैं । अतएव ये अनादिकालके कर्म थोडेही समयमें नष्ट हो जाय, इसका उपाय क्या है ? और वह देववाणीमें मिल आवे, ऐसी तरनीब यदि आप लोग करसके तो हमारी आत आत्माको अत्यत आनदका अनुपम एव अद्वितीय अनुभव हो । "

राजाकी यह बात सुनकर महाकवि माघ तथा कालिदासने देवी सरस्वतिका ध्यान किया तब सरस्वती

देवीने २००० पुस्तकोंसे लदे हुए बैल दिखाये। तब कवि कालिदासने पूछा कि "माता ! इन बैलोंपर क्या लदा हुआ है ?"

इस पर सरस्वति देवीने कहा कि "इन बैलोंपर ॐकारपदकी व्याख्याके किये हुए अर्थोंकी पुस्तकें लदी हुई हैं।"

माताजी ! क्या एकही अक्षरकी इतनी महिमा है ?" कालिदासने पूछा।

"वत्स ! समुद्रमेंके जलके बिंदु बिंदु गिनेसकें, करोडों मेरू पर्वतके जितने सरसोंके प्रचड ढिगके दाने गिन सके, तथापि ॐकारकी व्याख्या करनेके लिये कोई, मैं स्वय किम्बहुना बृहस्पतिभी अतएव तुम राजा भोजसे कहो कि कोई हीरे, पन्ने, मोती और सुवर्णके पहाडके पहाड नित्य-सदा सर्वदा देता रहे तौभी इसकी-ॐकारकी-बराबरी कोई नहीं कर सकता। यह तो मैंने थोडेमें कहा-बताया है। इस ॐकार मत्रपदका ध्यान हलते, चलते, सोते, बैठते, उठते, शरीरकी और वस्त्रकी शुद्धि न हो तौभी, विना होठ हिलाये, किया जा सकता है। इसका ध्यान करनेसे अत करणमें बुरे २ विचार नहीं आते चचल चित्त इधर उधर भटकता

नहीं फिरता । नये २ पापोंका बधन नहीं हो सकता और पूर्वके पुराने पापों (कर्मों) का नाश हो जाता है । उपरात, ॐकारका ध्यान करनेसे परमात्माके मार्गमें आगेको बढा जा सकता है और विशुद्ध अंत करणसे ध्यान किया जाय, वचन-शुद्धि सिद्धि प्राप्त होती है । "

प्यारे पाठक !

जब २ आप शान्तिमें हों तब २

ॐ ह्रीं अर्हं नमः

का नाकके अग्रभाग पर, दोनों आखोंकी पलकोंके बीचमें दृष्टि रखकर श्वेतवर्णका चिंतन करके उसका एकाग्र चित्तसे ध्यान करना चाहिये । जब हाथसे जप करना हो जब नवकारवाली अर्थात् नवकर याने हाथवाली–माने–नव बार गिनना । अर्थात् नव नव बार बार मिलकर १०८ बार हो जाय, इस प्रकार उसका जप-ध्यान करना चाहिये । और भी, दाहिने हाथमें १२ और बाए हाथमें ९ की रखना । ताकि नव बार १२-१२ गिननेसे १०८ हो जावेंगे ।

इस प्रकार हरेक प्राणी मात्रको

॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमः ॥

इस पदका तन-मनसे शुद्ध होकर श्वेत [illegible] अथवा चन्दनके बांधिया लेकर, ध्यान करना चाहिये ।

ॐकारके विषय बहुतसी बातें इनने दो २ [illegible] लिख दी हैं । अब ह्रीं और अर्हं पर बहुतही संक्षेपमें कुछ लिखते हैं । यथार्थ्यकालमें मायाबीज (लक्ष्मीका बीज) है । यथाही कालमें चौबीसो तीर्थंकर आ जाता है ।

। अर्हम् ।

मन्त्रपदोंमें " अर्हं " यह दूसरा पद है । परन्तु यह तमाम मन्त्रपदोंमें राजाके समान होनेसे इसे "मन्त्राधिराज" कहा जाता है ।

अकारादि हकारान्तं रेफमध्यं सबिंदुकम् ।
तदेव परमं तत्त्वं यो जानाति स तत्त्ववित् ॥
महा तत्त्वमिदं योगी यदैव ध्यायति स्थिरः ।
तदैवानन्दसंपद्भूमुक्ति श्री रूप तिष्ठते ॥

है, ऐसा जो अर्हं (नामक) मन्त्रपद है वही परमतत्व है। उसे जो जानता है वही यथार्थमें तत्त्वज्ञाता है। जब इस महान् तत्त्वका योगीलोग स्थिर होकर ध्यान करते हैं तब आनन्द स्वरूप सम्पत्तिकी भूमिके समान, मोक्षकी विभूति उसके आगे आकर उपस्थित हो जाती है।

कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमान् श्री हेमचन्द्राचार्यजी प्राय अपनी हरेक ग्रन्थकृतिम आद्य मंगलके नाते इसी पद (अर्हं) का स्मरण करते हैं। तथा "सिद्धहेम शब्दानुशास" नामक अपने सर्व प्रधान ग्रंथमें तो, इस मन्त्राक्षरको वैयाकरण शास्त्रके खास आद्य सूत्रके गूंथ देते हैं, और नीचे दिये मुताबिक उसकी व्याख्या करके उसके रहस्य और महत्त्व-कोभी समझाये देते हैं।

" अर्हं " (१-१-२)

" अर्हमित्येतदक्षरं परमेश्वरस्य परमेष्ठिनो वाचकं सिद्धचक्रस्यादिबीजं सकलागमोपनिषद्भूतमशेषविघ्नविघातनिघ्नमखिलदृष्टादृष्टफलसंकल्पकल्पद्रुमोपममाशास्त्राध्ययनाध्यापनावधि प्रणिधेयम् ॥ "

अर्थ.—'अर्हं, यह अक्षर परमात्मा परमेष्ठीका वाचक है, सिद्धचक्रका आदिबीज

याने सभी शास्त्रोंका रहस्यभूत है। सभी विघ्न समूहोंका नाश करनेवाला है, सब दृष्ट ऐसे जो राज्यसुखादि सुख, और अदृष्ट ऐसे जो स्वर्गसुखादि फल हैं, वह प्रदान करनेके लिये, सकल्प करनेवालोंके लिये मनोवाञ्छित फल देनेवाले कल्पतरूके समान है।

सभी आगमोंका-सभी शास्त्रोंका, ॐ यह रहस्य, किस प्रकार है, इसके उत्तरमें न्यायकारने, समझाया है कि—चों अर्हं पदमें परमेष्ठीका परमतत्त्व समाविष्ट हुआ है त्यों-ब्रह्मा, विष्णु और हर-शिवका स्वरूपभी, इस अक्षरमें अन्तर्हित हुआ है। कारण कि-इस पदमें जो 'अ'–'र' और 'ह' ये तीन अक्षर हैं वे तीनों अनुक्रमसे ब्रह्मा-विष्णु और महेश्वरके द्योतक है, ऐसा योगीजन मानते हैं। जैसा कि नीचे लिखे गये श्लोकमें कहा गया है —

अकारेणोच्यते विष्णू रेफे ब्रह्मा व्यवस्थितः।
हकारेण हर प्रोक्तस्तदन्ते परम पदम्॥

अर्थ.—'अ' अक्षर विष्णुका वाचक कहलाते हैं। रेफ याने 'र' अक्षरमें ब्रह्माकी स्थिति है और 'ह' अक्षरमें

'हर' अर्थात् शकर-महादेव कहे जाते है। इस पदके शब्दके अन्तमे जो ~ ऐसी चद्रकला है वह परमपद सिद्धशिला-की द्योतक-सूचक है। इस प्रकार अर्हं शब्द विष्णु आदिक लौकिक देवताओंका अभिधायक होनेसे वह सभी आगम अर्थात् सभी धर्मोके सिद्धान्तोंका यह एक रहस्यभूत है, ऐसा कहा जाता है। इसके उपरात अर्हं पदकी महिमा और गूढार्थ है, जिसका यहापर, विशेष प्रसग न होनेसे, विवेचन करनेकी कोई आवश्यकता प्रतीत नही होती।

अन्तमे—

कहनेका साराश यह है कि-जो मनुष्य सयम और श्रद्धापूर्वक इस मत्रपदका योग्य यथोचित रीतिसे जप या ध्यान करते हैं, उनके सभी मनोरथ सफल एव पूर्ण होते है, इसमे किसी प्रकारका सन्देह नहीं।

मत्रपदोंकी सहायतासे मनुष्य प्राणीके हरेक मनोरथ नि सन्देह सिद्ध होते है। मत्रपदोंके द्वारा इच्छित फल प्राप्तिकी अभिलाषा रखनेवालोंको चाहिये कि-वे सदा सर्वदा—

॥ ॐ ह्रीं अर्हं नम ॥

परमकल्याण मंत्र

सृष्टिमा दृश्यमान थती आ बधी विविधता शा माटे ?

एक राजा अने एक रांक, एक सुखी अने एक दु खी, एक रोगी, अने एक निरोगी, आवी विविधताओ विश्वमा आपणी नजरे पडे छे, तेनु खरू कारण पुण्य अने पाप छे पुण्यथी जीवो सुखी थाय छे, पापथी जीवो दु खी थाय छे

विश्वमा कार्यकारणना नियमो अचळ छे कारण विना कार्य थतु नथी, चालु सुरतु सना कार्यो तेना कारणनी अपेक्षा राखे छे, कारण पहेलु, अने कार्य पछी, आ नियमानुसार अत्यारनी मनुष्यनी स्थिति पूर्वना कारणानुसारे बनेली छे

धनादि अनुकुळ साधनानी प्राप्तिमा पुरुषार्थनी साथे पुण्यप्रकृति होय तोज मनुष्य सफळता पामे छे परमार्थ अने परोपकारना कार्यथी जीवो पुण्य उपार्जन करे छे मन, वचन शरीर, अने धनादिनो सदुपयोग करवाथी पुण्य नधाय छे, उत्तरोत्तर जीव आगळ वधे छे

आ परमात्माना नामनु स्मरण गरीब अने धनाढ्य, बाळ, जुवान अने वृद्ध, सुखी अने दु खी, दरेक जीव करी

जाप अनेक प्रकारना छे, पण जे जाप करवामा पोतानु साध्य स्मरणमा रहे, रोमेरोममा पोतानु लक्ष परिणमी रहे ते जाप उत्तम छे आवो जाप ॐ अर्हं नमः आ पाच अक्षरनो छे आनो अर्थ आ प्रमाणे छे ॐकारमा पच परमेष्ठिनो समावेश थाय छे पच परमेष्ठि ओ आत्माना शुद्ध स्वरुपनी प्राप्तिनी पाच भूमिका छे, ते दरेकनो प्रथम अक्षर रहीने ॐकार बनेलो छे

अरिहत, अशरीरि, आचार्य, उपाध्याय, अने मुनि आ पाच भूमिका छे

आत्मानु शुद्ध, पूर्ण स्वरुप ते अशरीरि सिद्ध परमात्मा छे, तेने देहातीत पूर्णब्रह्म, ब्रह्मस्वरुपसिद्ध, अजर, अमर, अविनाशी इत्यादि अनेक नामोथी बोलवाय छे, आनी अदर निर्वाण पामेला मोक्षे गयेला दरेक आत्मानो समावेश थाय छे अरिहत ओ देहमा रहेल पूर्णस्वरुप परमात्मानु नाम छे, अने देहनो त्याग करता सिद्ध परमात्मा गणाय छे आनी अदर दरेक पूर्णज्ञानी, केवळज्ञानी, तीर्थंकर आदीनो समावेश थाय छे

आचार्यनी अदर प्रभुमार्गना रक्षक, पोषक सदेश-वाहक, सत्य वस्तुना प्रतिपादक, समुदायना मालिक अने पूर्णता मेळववा प्रयत्न करनारनो समावेश थाय छे

उपाध्यायनी अदर मूळ वस्तुतत्त्वना प्रतिपादक अनेक जीवोने जागृति आपनार उच्च कोटिना साधकोनो समावेश थाय छे

मुनिओनी अदर जेओने बोधीबीजनी प्राप्ति थई छे ते पछीना सर्वस्व त्यागी, वैरागी, स्वस्वरुपमा रमणता करनारा, स्वपर उपकारी, सर्व साधुवर्गनो समावेश थाय छे

आ सर्वना प्रथम अक्षर अ, अ, आ, उ, म्, थी ॐकार बनेलो छे व्याकरणना नियम प्रमाणे पाचे मळी ॐ थाय छे

अर्हं शब्द ओ परमात्मानु नाम छे 'अर्हं' अेटले लायक, विश्वमा जे लायकमा लायक तत्त्व छे ते अर्हं छे, जेनी आगळ विशेष लायकात न होय तेने सुचवनार शब्द अर्हं छे, तेमज अर्हं शब्द ओ सिद्धचक्रनो बीजमत्र छे सिद्ध पुरुषोनो समुदाय ते सिद्धचक्र छे जेमा विश्वना तत्त्वरुप, देव, गुरु अने धर्म ओ त्रणे तत्त्वनो समावेश थाय छे

अरिहत अने सिद्ध ओ बेनी अदर देवनो समावेश थाय छे आचार्य, उपाध्याय, अने मुनि बेनो गुरुवर्गमा समावेश थाय छे दर्शन ज्ञान, चारित्र अने तप ओ चारनो धर्मना समावेश थाय छे आत्मानु उच्च स्वरुप प्रगट

थवाना साधनो ते धर्म छे, आत्मादि वस्तुनु ज्ञान ते ज्ञान छे, तेनी द्रढ श्रद्धा ते दर्शन छे, ज्ञान अने श्रद्धा प्रमाणे वर्तन करवु ते चारित्र छे, सर्व इच्छाओनो निरोध करवो ते तप छे, आचारने धर्म कहेवामा आवे छे उपरना पाच परमेष्ठि साथे मेळवता नव थाय छे जे नवना समुदायने सिद्धचक्र कहे छे ते नवनो वाचक शब्द अर्हं छे अर्हं शब्द बीजरूप होवाथी तेमा सिद्धचक्रनो समावेश थाय छे आ देव, गुरु, अने धर्म ए आत्मानी चढती भूमिकाओनु लक्ष राखी जाप करवो ते आत्मानो शब्दरूपे जाप करवा बरावर छे, ते ॐ अर्हं नम आ जाप छे आ मत्रना करोडो जाप करवा जोईए जाप करवाथी हल्का विचारो आपणी आगळ आवता नथी, मन बीजे भटकी पाप बाधतु बध थाय छे जापथी आपणी तरफ पवित्र परमाणुओ खेंचाई आवे छे, आपणी आजुबाजुनु वातावरण पवित्र थाय छे, सकल्पो सिद्ध थाय छे, पाप घटे छे, प्रतिकुलताओ दूर थाय छे, अनुकुलताओ आवी मळे छे प्रभुना मार्गमा आगळ वधवाना अधिकारी थईए छीए, लोकप्रिय थवाय छे, व्यवहारनी मुश्कवण ओछी थाय छे अने लाबा वखते वचन-सिद्धि पण थाय छे आ सर्व परमात्माना नामस्मरणथी थाय छे

ॐकार स्तुति

छप्पय छंद

ॐ नम मगल सुखकारी जग जयकारी,
ॐ नम मगलपदनी, जगमा बलिहारी,
ॐ नम अजरामर, अनत शक्ति विलासी,
ॐ नम परमेश्वर, शक्ति सत्य प्रकाशी,
ॐकार ध्याने आत्मशक्ति, प्रगटती जगमा खरी,
बुद्धिसागर प्रणव मगल, ध्यानथी सिद्धि वरी १
अगम निगमनो सार, प्रणव ॐकार विचारो,
परब्रह्मनी शक्ति, खीलववा मनमा धारो,
चित्त दोषनो नाश, करे छे जाप कर्याथी,
सात्विक शक्ति प्रगटावे छे, ध्यान धयाथी,
अलख अगोचर रूप, वरवा प्रणव साचो मत्र छे,
बुद्धिसागर सत्यनिर्भय, देश वरवा यत्र छे २
सम्यग् लही वाच्यार्थ, हृदयमा रटना धारो,
अनत कर्म कटाय, प्रणवथी चित्त विचारो,
सा लबन छे ध्यान, प्रणवनु शास्त्रे भाख्यु,
धरी प्रणवनु ध्यान, योगिओए सुख चाख्यु,
ॐकार मगल आद्य छे, जग श्वासोश्वासे ध्यायीए,
बुद्धिसागर शिव सनातन, सिद्ध लीला पाइए ३

हृदय कमळमा प्रणव स्थापना प्रेमे करीजे,
कोटि भवना पाप, घडीमा क्षणमा हरीजे,
प्रगटे रुचिर चित्र, वचननी सिद्धि थावे,
अंतर त्राटक सिद्ध करे ते स्थिरता पावे,
आत्मशक्ति खीलववाने, ॐकार अर्थ विवेक छे,
बुद्धिसागर प्रणव मंगल, ध्यान साचो टेक छे ४

आनंद अपरपार, हृदयमा झळके ज्योति,
असंख्य प्रदेशी चिद्‌घन चेतन परखे मोती,
नासे माया दूर, हृदयमा ब्रह्म प्रकाशे,
परम भावनी ध्यान, दशामा हंस विकासे,
प्रेम मस्ताना दिलप्याला, ब्रह्म अमृत पीजीये,
बुद्धिसागर ब्रह्मलीला, पामी नीज रंग रीझीजे ५

प्रणव मंत्रथी निंद्रा, विकथा दोष टळे छे,
प्रणव मंत्रथी अष्ट, सिद्धिओ तुर्त मिळे छे,
प्रणव मंत्रथी संयम, शक्ति प्रगटे सारी,
प्रणव मंत्रथी झळहळ, ज्योति जग जयकारी,
प्रणव मंत्र ॐकार दिव्य ध्यावता सुख भासतुं,
बुद्धिसागर प्रणव मंत्रे, सत्यानंद प्रकाशतुं ६

नाभिकमळमा प्रणव, मत्रने प्रेमे स्थापो,
स्थिरता अतर्मुहुर्त, भवाथी टळे वळापो,
अखड ज्योति झळके, झळ हळ सुरता साधे,
वरसे समता नूर, आत्मनी शक्ति वाधे,
अखड स्थिर उपयोग माहि, चेतन्य शक्ति दिनमणि,
बुद्धिसागर अनुभवे त्या, देह स्वामि जगधणी ७

नाभिकमळमा असख्य प्रदेशी चेतन ध्यावो,
चिदानद भगवान, ईशने भावे भावो,
रुचक प्रदेशे अष्ट, सिद्धसम निर्मळ सारा,
अष्ट सिद्धि दातार, धरो मनमा सुखकारा,
आत्मसिद्धि प्राप्त करवा, ॐकार मनमा ध्यायीओ,
बुद्धिसागर प्रणव मत्रे, सिद्धलीला पाइओ ८

अगम्य शब्दातीत, प्रणवथी सहेजे मळशे,
रजस तमो गुण दोष, प्रणवथी सहेजे टळशे,
सात्विक गुणनी वृद्धि, परपर शाश्वत लीला,
निर्भय शुद्धस्वरूप, रगमा भव्य रमीला,
देव दानव भूत कोडी, प्रणवथी पाये पडे,
बुद्धिसागर अकल निर्भय, तत्व मौक्तिक कर चढ ९

ॐकार स्तुति

छप्पय छद

ॐ नम मगल सुखकारी जग जयकारी,
ॐ नम मगलपदनी, जगमां बलिहारी,
ॐ नम अजरामर, अनत शक्ति विलासी,
ॐ नम परमेश्वर, शक्ति सत्य प्रकाशी,
ॐकार ध्याने आत्मशक्ति, प्रगटती जगमा खरी,
बुद्धिसागर प्रणव मगल, ध्यानथी सिद्धि वरी १

अगम निगमनो सार, प्रणव ॐकार विचारो,
परब्रह्मनी शक्ति, खीलववा मनमा धारो,
चित्त दोषनो नाश, करे छे आप कर्याथी,
सात्विक शक्ति प्रगटावे छे, ध्यान धयाथी,
अलख अगोचर रूप, वरवा प्रणव साचो मत्र छे,
बुद्धिसागर सत्यनिर्भय, देश वरवा यत्र छे २

सम्यग् ल्ही वाच्यार्थ, हृदयमा रटना धारो,
अनत कर्म कटाय, 'प्रणवथी चित्त विचारो,
सा ल्वन छे ध्यान, प्रणवनु शास्त्रे भाख्यु,
धरी प्रणवनु ध्यान, योगिओअे सुख चाख्यु,
ॐकार मगल आद्य छे, जग श्वासोश्वासे ध्यायीअे,
बुद्धिसागर शिव सनातन, सिद्ध लीला पाइअे ३

हृदय कमळमा प्रणव स्थापना प्रेमे करीओ,
कोटि भवना पाप, घडीमा क्षणमा हरीओ,
प्रगटे रुद्धि चित्र, वचननी सिद्धि थावे,
अंतर त्राटक सिद्ध करे ते स्थिरता पावे,
आत्मशक्ति खीलववाने, ॐकार अर्थ विवेक छे,
बुद्धिसागर प्रणव प्रगट, ध्यान साचो टेक छे ४

आनंद अपरपार, हृदयमा झळके ज्योति,
असंख्य प्रदेशी चिद्घन चेतन परखे मोती,
नासे माया दूर, हृदयमा ब्रह्म प्रकाशे,
परम भावनी ध्यान, दशामा हंस विकासे,
प्रेम मशाला डिप्प्याला, ब्रह्म अमृत पीजीये,
बुद्धिसागर ब्रह्मलीला, पामी नीज दिन रीझीओ ५

प्रणव मंत्रथी निंदा, विकथा दोष टळे छे,
प्रणव मंत्रथी अष्ट, सिद्धिओं तुर्त मिळे छे,
प्रणव मंत्रथी संयम, शक्ति प्रगटे सारी,
प्रणव मंत्रथी झळहळ, ज्योति जग जयकारी,
प्रणव मंत्र ॐकार दिलमा ध्यावता सुख भासतु,
बुद्धिसागर प्रणव मंत्रे, सत्यतत्त्व प्रकाशतु ६

नाभिकमळमा प्रणव, मनन प्रेमे स्थापो,
स्थिरता अंतर्मुहूर्त, थवाथी टळे भळापो,
अखंड ज्योति झळके, झट टळे सुरता साधे,
वरसे समता नूर, आत्मनी शक्ति वाधे
अखंड स्थिर उपयोग माहि, चैतन्य नाचे दिनमणि,
बुद्धिसागर अनुभवे त्यां, देह स्वामि अगभगी ७

नाभिकमळमा असंख्य प्रदेशी चेतन ध्यावो
चिदानंद भगवान, ईशने भावे भावो,
रुचक प्रदेशे आठ, सिद्धसम निर्मळ सारा,
अष्ट सिद्धि दातार, धरो मनमा सुखकारा,
आत्मसिद्धि प्राप्त करवा, ॐकार मनमा ध्याईअे,
बुद्धिसागर प्रणव मंत्रे, सिद्धलीला पाईअे ८

अगम्य शब्दातीत, प्रणवथी स्हेजे मळता,
रजस तमो गुण लोप, प्रणवथी स्हेजे टळता
सात्त्विक गुणनी वृद्धि, परस्पर शोधन रीता,
निर्भय शुद्धस्वरूप, रसमा मस्त रसीला,
देव दानव भूत कोडी, प्रणवथी पाय पडे,
बुद्धिसागर अकळ निर्भय, तत्त्व मौक्तिक कर चडे ९

प्रणव मत्रना अर्थ थकी, चेतनने ध्यावो,
पामी नरभव दुर्लभ, लेशो आत्मिक ल्हावो,
परम ईश भगवान, खरेखर चेतन परखो,
परममत्रथी चेतन, ध्याने मनमा हरखो,
परम ईश्वर प्राप्त करवा, प्रणव साचो ध्याईओ,
बुद्धिसागर ध्यानलीला, प्रणव मत्रे पाईओ १०

हृदयकमलमा प्रणव, मनने प्रेम स्थापो,
निजगुण शक्ति खीलवी, निजने स्हेज आपो,
विषय विकारो त्याग, करी अतरगुण धारो,
निर्विकल्प उपयोग, धरी चेतनने तारो,
आत्मजीवन उच्च करवा, प्रणव सत्योपाय छे,
बुद्धिसागर प्रणव मत्रे, सहज लीला थाय छे ११

प्रणव मत्रथी चित्त तणा, सौ दोष टळे छे,
प्रणव मत्रथी सात्विक, गुणमा चित्त मळे छे,
प्रणव मत्रथी सयमनी, प्रगटे छे सिद्धि,
प्रणव मत्रथी आत्यतिक, सुख ठे रद्धि,
प्रणव मत्रे स्वप्न निर्मळ, देव दर्शन थाय छे,
मोहग्रथी भेद थाता, शक्ति झट परखाय छे १२

हृदय कमळमा स्थिरोपयोगे ध्यान खुमारी,
हृदय कमळमा स्थिरोपयोगे शिव तैयारी,
हृदय कमळमा स्थिरता साधी शिवपद लीजे,
प्रणवमंत्रने हृदय कमळमा नित्य वदीजे,
असंख्य प्रदेशी आत्म दर्शन कीजीये प्रेमे सदा,
बुद्धिसागर आत्म दर्शन स्थिरोपयोगे छे मुदा १३

पश्यति प्रगटे छे, त्राटक योगे साची,
हृदय कमळमा ध्यान, धरीने रहेसो राची,
शुद्ध विचारो परातणा पण प्रगटे साचा,
पश्यति प्रगट्याथी, निर्मळ साची वाचा,
असंख्य प्रदेशी ध्यावसाधी, पश्यति विकसे खरी,
बुद्धिसागर परापश्यति, मुक्तिझट दिलमा धरी १४

परापश्यतिमा तो, प्रभुनु रुप जणातु,
अनुभवथी योगीश्वर, वचने सत्यप्रहातु,
शुद्ध स्वभावे आत्मिक, दर्शन तुर्त थमातु,
आत्मिक भावे अनंत, सुखतो दिलमा थातु,
सहज चेतन ध्यान करवा, प्रणव प्रथमोपाय छे,
बुद्धिसागर सहज रद्धि, प्रणव मंत्रे थाय छे १५

परमेष्टि आद्याक्षरथी, ॐकार भण्यो छे,
सर्व मंत्रमा आद्यमां, ॐकार गण्यो छे,
सर्व मंत्रमा प्रणव मंत्र, छे शिव सुखकारी,
आपे क्षित जीन वचनो, समजो नरने नारी,
प्रणव मंत्रे सत्व शक्तिज, प्रगटती दिलमा खरी,
बुद्धिसागर प्रणव मंत्रे, शांतता मनमा वरी १६

प्रणव मंत्रमा सर्व मंत्रनो, सार समातो,
प्रणव मंत्रनो महिमा, जगमा बहु वखणातो,
प्रणव मंत्रने जगमा, मुनिवर प्रेमे साधे,
प्रणव मंत्रथी सूर्य समो, महिमा जग वाधे,
कंठ चक्रमा प्रणवमंत्रे, वचन सिद्धि थाय छे,
टळे पिपासा प्रणव मंत्रे कंठ संयम थाय छे १७

त्रिपुटीमा प्रणव मंत्रनु, ध्यानज साधु,
तद्रावस्था जयकारी, ॐकारे राधु,
प्रणव मंत्रे दर्शन, आपे ज्ञानक दवो,
सालंबन ॐकार, मंत्रने प्रेमे सेवो,
सालंबन ॐकार मंत्रे, देव दर्शन थाय छे,
बुद्धिसागर प्रणव मंत्रे, सत्य शांति प्रगट छे १८

दर्शन आच्छादन टळतुं, ॐकार प्रभावे,
त्रिपुटीमा प्रणव मन्त्रथी, ज्ञानी गावे,
त्रिपुटीमा सालम्बन, सयमनी रीती,
मन वश करवा माटे, सालम्बननी नीति,
त्रिपुटीमा प्रणव मन्त्रथी, दोष सघळा झट टळे,
बुद्धिसागर प्रणव मन्त्रे, इच्छीअे ते झट मळे १९

अक्षरब्रह्म प्रणव मन्त्रने, प्रेमे साधो,
अक्षरब्रह्म प्रणव मन्त्रना, करीअे जापो,
अक्षरब्रह्म परम समाधि, मगलकारी,
उपादान निमित्त हेतुना, पुष्ट थनारी,
प्रणवमन्त्रना ध्यान योगेज लब्धि रुद्धि प्रगटती,
बुद्धिसागर गुरु कृपाथी प्रणवमन्त्रे छे गति २०

गुरु कृपाथी प्रणवमन्त्रनी, सिद्धि थावे,
गुरु कृपाथी सव सिद्धिओ, प्राणी पावे,
सुगुरु जनने प्रणवमन्त्र, तो तुर्त फळे छे,
सुगुरा जनने प्रणवमन्त्रनु, सार मळे छे,
प्रणवमन्त्रनो साथ महिमा, माणसा आवी रच्यो,
सुखाब्धि गुरुना प्रतापे, बुद्धिसागर मन पच्यो २१

योगनिष्ट आचार्य बुद्धिसागरजी सुरीजी

अध्यात्म भजन सग्रह पृ १७५